रात्रि क्लास ओमशान्ति **********शिव बाबा याद है?********** 28-8-68

बर्षा आजकल छूटटी ले जा रही है। यह पुरानी दुनिया भी छूटटी ले जा रही है ना। फिर नई दुनिया का समय पूरा होगा तो छूटटी ले जावेंगे। बाप समझाते हैं अभी ऐसे होना है। रावण राज्य में रावण कुछ समझाते हैं क्या। रावण कुछ बोलते नहीं। उनकी समझानी भी बाप ही देते हैं रावण क्या चीज़ है, कौन है। बाप ही बत हैं। रावण की प्रजा भी आसुरी ठहरी ना। यह कोई गुस्से में आते हैं तो कह देते हैं यह तो आसुरी राज्य रावण राज्य है। परन्तु सचमुच कैसे है यह नहीं जानते हैं। तुम बच्चों को अभी समझ मिली है दुनिया में कितना अज्ञान है। हम भी अज्ञानी थे। रावण को जानते थोड़ेई थे। बच्चों को दो बात में विजय पानी है। सन्यासी भी अपनी भूल महसुस करेंगे। बरोबर हमारी बुधि में नहीं बैठता था। शास्त्रों में है सन्यासियों को ब्रह्माकुमारियों ने बाण मारी है। तो उन्हों ने कहा है बरोबर यह ईश्वरीय ज्ञान बाण है। तुम्हारा भी समझेंगे बरोबर यह ईश्वरीय ज्ञान है। जैसे तुमको मालूम पड़ा है वैसे औरों को भी पड़ेगा। जितनी भक्ति की है उतना जल्दी समझेंगे। कम भक्ति की होगी तो देरी से समझेंगे। बाप बच्चों को ताकिद करते हैं कहां भी सर्विस हो तो खर्चा को न देख सर्विस पर भागना चाहिए। आगरा में सर्विस है तो मदद देनी चाहिए। देहली में तो बहुत सेन्टर्स हैं। तो देहली से बहुतों को मदद मिल सकती है। जहां सर्विस अच्छी हो सकती है वहां जरूर रखा जाता है। देखते हैं यहां सर्विस बुधि को नहीं पाती है तो जाने से घबड़ते हैं। बड़े2 आदमी आते हैं तो उनको मुख्य जो बातें हैं उस पर ही समझाना है। बाप सर्वव्यापी नहीं है। सर्वव्यापी 5 विकार है। अच्छी रीति बुधि में बिठाना है। गीता का भगवान कृष्ण है, यह भूल है। भगवान तो एक है। यह तो देवता है। सतयुग का पहला प्रिन्स है। अच्छी रीति समझाना है। भूल न जाये। ऐसे भी नहीं लिखा हुआ बैठ सुनावे। तो समझेंगे इनको सिखाया हुआ है। अनुभव से सुनावे न गीता का भगवान कृष्ण है, न कृष्ण ने ऐसे कहा है। ऐसे नहीं महाभारत लड़ाई में पाण्डवों ने हिंसा की है। न कौरवों पाण्डवों की कोई लड़ाई लगी है। यहां लड़ाई लगनी है यवनों की। यवन और कौरव आसुरी सम्प्रदाय। बड़ा आदमी अगर समझे बरोबर यह रावण राज्य है तो फिर कह सकते हैं रामराज्य तो सतयुग में होता है। ऐसे2 मुख्य पायन्टस समझा कर पक्का कराना चाहिए। तो फिर उनका अखबार में भी डाल सकते हैं। बड़े अखबार न डालेंगे। इन बात में समझने वाले ही लिखेंगे। सब से बड़ी बात है यह। सर्वव्यापी परमात्मा नहीं है। यह राईट बात है ना। और भी अखबारें फिर कापी कर सकते हैं। आजकल तो ऐसे2 बातें समझाना बड़ा मुश्किल है। मूल बात है ही यह। अखबार वाले को छेड़ते हैं तो ऐसे से उल्टा सुल्टा डाल देते हैं। तुम्हारे पास ओपिनीयन की किताब होगी तो फिर समझ जावेंगे। गवर्मेन्ट भी रिपोर्ट पेश कर कुछ स्टेप ले सकते हैं। यह दोनो भूलें जो हैं सर्वव्यापी और गीता के भगवान की यह है भारत की ग्लानी की। तो कोई जरूर कुछ न कुछ कदम उठावेंगे। तो तुम्हारी विजय भी हो। सर्विस में ढिलाई न पड़ेगी। बाबा भी लिखते रहते हैं जल्दी ओपिनीयन की किताब बनाओ। मैगजीन की दरकार नहीं है। मास भर में यह किताब निकल जाये। जल्दी भी हो सकता है। कोई राजा हो या बड़े आदमी गवर्मेन्ट को आर्डर करे तो माना जाता है ना। यह तो बहुत बड़ी गवर्मेन्ट है। इनकी डायरेक्शन जल्दी ही अमल में लानी चाहिए। परन्तु इतना रिगार्ड न है। साधारण है ना। नहीं तो काम में देरी न करे। पोजीशन वालों की ओपिनीयन हो। इन बातों पर असर बहुत अच्छा पड़ेगा। फिर उल्टा सुल्टा डालेंगे नहीं। बच्चों की ही लापरवाही है। सुनते तो हैं ना। बाबा उन्हों के लिए ही कहते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रित याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।